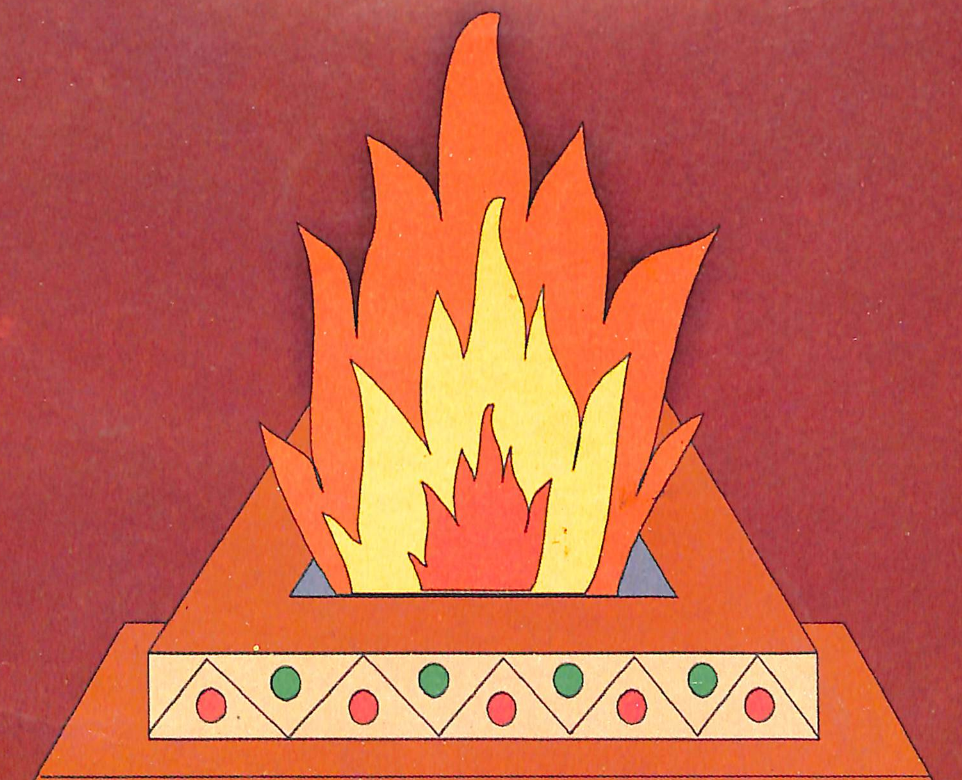
महामृत्युञ्जय

यज्ञ



संकलन: विराज

महामृत्युञ्जय यज्ञ

(गम्भीर प्राण संकट से ग्रस्त रोगियों के
आरोग्य के लिए अथर्ववेदीय यज्ञ)

विराज

हेमगंगा प्रकाशन
27-राजपुर रोड, सिविल लाइन्स, दिल्ली-110054

महामृत्युञ्जय यज्ञ (कर्मकांड)

Mahā Mṛtyuñjaya Yajña (Ritual)

compiled by VIRĀJ

संकलनकर्ता—विराज

प्रथम संस्करण : 2004

मूल्य : 20 रुपये

प्रकाशक :

हेमगंगा प्रकाशन

27-राजपुर रोड, दिल्ली-110054

लेज़र कम्पोज़ :

सुशील दीक्षित, 16/291-आई, पी.ऐल. रोड,

बापा नगर, करौल बाग, नई दिल्ली-5, दूरभाष : 25746167

मुद्रक :

त्रिवेणी आफसैट, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

महामृत्युञ्जय मंत्र

(ओम्) त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।

ऋग्वेद, 7.59.121, यजु. 3.60

अर्थ : हम (सुगन्धिं) अच्छी सुगन्ध वाले, उत्तम यश वाले (पुष्टिवर्धनं) पुष्टि अथवा शक्ति को बढ़ाने वाले (त्र्यम्बकं यजामहे) तीनों लोकों के नियन्ता अथवा सृष्टि के उत्पादक ब्रह्मा, पालक विष्णु और संहारक शिव के भी पिता पर ब्रह्म की अर्चना उपासना करते हैं। (बन्धनात् उर्वारुकं इव) जैसे खरबूज़ा या खीरा पक जाने पर बन्धन अर्थात् डंठल से स्वयं बिना कष्ट अलग हो जाता है, उसी प्रकार मैं (मृत्योः मुक्षीय) मृत्यु से अर्थात् इस रोग से छुटकारा पा जाऊं और (अमृतात् मा मुक्षीय) जीवन से अलग न होऊं।

सम्पुट यज्ञ या सम्पुट जाप विधि

सम्पुट यज्ञ में तीन मंत्रों का सम्पुट होता है। पहले महागायत्री मंत्र, उसके बाद यज्ञ का क्रमानुसार पहला, दूसरा, तीसरा आदि मंत्र, उसके बाद महामृत्युञ्जय मंत्र, इस प्रकार एक सम्पुट बनता है। महामृत्युञ्जय यज्ञ के सब मंत्रों की आहुति एक के बाद एक सम्पुट बना कर दी जाती है। इसमें लगभग तिगुना समय लगता है।

महागायत्री मंत्र

1. (ओम्) भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।
2. इसके बाद यज्ञ का क्रमानुसार 'अन्तकाय मृत्यवे नमः...' आदि मंत्र; और उसके बाद
3. महामृत्युञ्जय मंत्र।

उपहार प्रति

मेरे अनुज विद्वद्वर श्री उदयवीर विराज ने मुझे स्वलिखित पुस्तक **महामृत्युञ्जय यज्ञ** दी। उसे देख व पढ़ कर बहुत प्रसन्नता हुई।

मुझे स्मरण हो आया कि मैंने भी अपनी माता श्रीमती सुमति देवी के डॉक्टरों द्वारा रोग की अवस्था असाध्य घोषित करने के बाद अथर्ववेद के अष्टम काण्ड के मृत्यु देवता वाले प्रथम तथा द्वितीय सूक्त के 48 मन्त्रों का–मन्त्र से पूर्व महागायत्री (गुरु मन्त्र) और मन्त्र के बाद महामृत्युञ्जय मन्त्र का–सम्पुट बना कर एक मास तक उनके कमरे में उनके सम्मुख यज्ञ किया था।

उनका एकमात्र होम्योपैथिक उपचार सेंट स्टीफन्स कालेज, दिल्ली में वेदोपाध्याय श्री सत्यभूषण 'योगी' कर रहे थे। वे भी पूर्ण स्वस्थ हो गई थीं और उसके बाद अनेक वर्षों तक जीवित रही थीं।

इसमें कितना योग औषध का रहा और कितना सहयोग यज्ञ का रहा, यह ईश्वर ही जानता है। परन्तु हमें बहुत आनन्द और सन्तोष मिला था।

उसी स्मृति में मैं यह पुस्तक यज्ञ प्रेमियों को भेंट कर रहा हूँ।

राधेश्याम (मनोहर विद्यालंकार)

पता :

1. गुरु कृपा ट्रेडर्स (मेवा वाले)
2. श्यामसुन्दर राधेश्याम (सूत वाले)
   522 ईश्वर भवन, खारी बावली, दिल्ली-6

श्री उदयन

पुलिस महानिरीक्षक

प्राचार्य पुलिस प्रशिक्षण कालेज–II, मुरादाबाद

के आरोग्य एवं दीर्घायु के लिए

किये गये

महामृत्युञ्जय यज्ञ

के निमित्त रचित

एवं प्रकाशित

विराज की अन्य रचनाएं

वनराज के राज में	(वन्य जीवन)
वे चिंघाड़ते हाथी	(वन्य जीवन)
गजभूमियां	(वन्य जीवन)
मेला शिकार	(वन्य जीवन)
वन रोमांच	(वन्य जीवन)
जंगल थे रमणीय भयंकर	(वन्य जीवन)
हाथियों का खेदा	(वन्य जीवन)
श्री श्री अबोधकुमार	(हास्य व्यंग)
वसन्त के फूल	(कविता)
अरुणोदय	(कविता)
हम हिन्दू हैं	(कविता)
हर की पैड़ी	(कविता)
प्रेमदूती	(कविता)
वे बलिदानी वीर	(कविता)
नेपालेश्वर	(उपन्यास)
तीन गांधी हत्याएं	(ताज़ा इतिहास)
निज़ामशाही पर पहली चोट	(ताज़ा इतिहास)
जनमता देखा बंगला देश	(ताज़ा इतिहास)
असिधारा	(प्रेरक कहानियां)
विष से विकट शराब	(मद्य निषेध)
प्रामाणिक आलेखन और टिप्पण	(कार्यालय पद्धति)
हिन्दी निबंध लेखन	(छात्रोपयोगी)
आज़ाद हिन्द का तिरंगा झंडा	(एकांकी संग्रह)
सम्राट् विक्रमादित्य	(नाटक)
रति विलाप	(गीत नाट्य)

महामृत्युञ्जय यज्ञ

कभी ऐसा होता है कि अपना कोई प्रियजन (पुत्र, भाई, पत्नी, पति, पुत्री, पौत्र, पौत्री आदि) किसी प्राणान्तक रोग या आघात से पीड़ित होता है; मृत्यु निकट जान पड़ती है; वैद्य तथा चिकित्सक आशा छोड़ बैठते हैं; उस समय अथर्ववेद के मृत्युंजय मंत्रों का पाठ करने से और अग्नि में आहुतियां देने से बहुत लाभ होता है। यह आशय नहीं है कि इससे सदा मृत्यु टल ही जायेगी। टल भी जाती है और हो सकता है कि न भी टले। यह अन्तिम उपाय है, जो रोगी की प्राण रक्षा के लिए किया जा सकता है।

इन मंत्रों में रोगी की प्राण रक्षा के लिए दैवीय शक्तियों से मर्मस्पर्शी प्रार्थना है, रोगी का मनोबल बढ़ाने के लिए दृढ़ सान्त्वना है और परिजनों तथा परिचारकों के लिए सन्तोष है कि रोगी की प्राण रक्षा के लिए जो भी कुछ किया जा सकता था, वह कर दिया गया है।

यह महामृत्युञ्जय यज्ञ चिकित्सकों द्वारा की जा रही चिकित्सा का पूरक मात्र है। चिकित्सा जो भी चल रही हो, चलती रहनी चाहिए। ये मंत्र चिकित्सा का बल बढ़ायेंगे।

महामृत्युञ्जय यज्ञ कमरे में नहीं, खुली छत पर या खुले आंगन में किया जाना चाहिए। हवन कुंड का धुआं रोगी के कमरे में न भरे।

रोगी की शय्या यज्ञ कुंड से इतनी दूर रहनी चाहिए कि मंत्रों की ध्वनि रोगी के कानों तक पहुंच सके, किन्तु धुआं उस तक न पहुंचे। रोगी के पास भीड़ किसी दशा में न हो। यदि रोगी चाहे, तो बीच बीच में जल का आचमन करता रहे। जल परम औषध है।

मंत्र पाठ करने वाले व्यक्ति दो से अधिक न हों। एक थक जाये, तब दूसरा मंत्र पाठ करे। रोगी आहुतियां न दे। वह यथाशक्ति आराम से लेटा रहे। जिस समय यज्ञ में मंत्र पाठ हो रहा हो, यज्ञ में उपस्थित सभी लोग उन मंत्रों और उनके अर्थ का मन ही मन पाठ करें। यह

प्रार्थना आवश्यक है। दूरस्थ लोग भी इन मंत्रों के पाठ से रोगी के नीरोग होने में सहायक हो सकते हैं।

आवश्यक सामान :

हवन कुंड—यह बना बनाया मिलता है। लोहे या तांबे का हवन कुंड सुविधाजनक रहता है।

समिधाएं—यज्ञ के लिए लकड़ी आम, पीपल, गूलर, जामुन, चीड़ या देवदार की हो। वह बिल्कुल सूखी हो, जिससे धुआं न हो।

घी—घी की आवश्यकता केवल आग को जलती रखने के लिए होती है। आग पर सामग्री डालने से उसके बुझ जाने का भय रहता है, अतः घी की आहुति देनी पड़ती है। एक बार के यज्ञ में २०० ग्राम घी पर्याप्त है।

हवन–सामग्री—यह ऐसे अनेक पदार्थों का मेल होता है, जो आग में जल कर सुगन्ध फैलाते हैं। हवन सामग्री अच्छी होनी चाहिए। एक बार के यज्ञ के लिए ४०० ग्राम सामग्री पर्याप्त है।

गूगल—जब यज्ञ पूरा हो जाये और हवन कुंड में आग की लपटें समाप्त हो जायें, तब दहकते कोयलों पर गूगल डालना चाहिए। गूगल का धुआं रोग के कृमियों का नाश करता है।

आचमन के लिए जल पात्र होने चाहिए। घी के लिए कटोरी, सामग्री के लिए थाली और आहुति के लिए लम्बी डंडी वाली चम्मच होनी चाहिए।

महामृत्युञ्जय यज्ञ तमाशा नहीं है। यह एक महत्वपूर्ण आयोजन है। इसमें अनावश्यक भीड़ कदापि नहीं होनी चाहिए। कम आयु के बच्चे सम्मिलित न हों। केवल घर के लोग, जो इस यज्ञ में पूरी श्रद्धा रखते हों, दो एक मंत्रपाठियों के साथ यज्ञ में बैठें। जिन्हें श्रद्धा न हो, उनसे विनयपूर्वक अनुरोध किया जाये कि वे यज्ञ में सम्मिलित न हों।

यज्ञ विधि में व्याघात होने से अनिष्ट की संभावना रहती है।

उपासना—महामृत्युञ्जय यज्ञ उपासना मंत्र से आरम्भ होता है :

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।

यद् भद्रं तन्न आसुव। (यजु. ३०.३)

(देव सवितः) हे सृष्टि के प्रेरक सविता देव, **(विश्वानि दुरितानि)** सब बुराइयों (रोगों) को **(परा सुव)** हमसे दूर भगा दो। **(यत् भद्रं)** और जो कुछ अच्छा, भला (आरोग्य, स्वास्थ्य) है, **(तत् नः आसुव)** उसे हमें प्राप्त कराओ।

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।
(यजु. २५.१३)

(यः आत्मदा) जो आत्म बल देने वाला है, **(यः बलदा)** जो शारीरिक बल देने वाला है, **(यस्य विश्वे उपासते)** जिसकी सब लोग उपासना (पूजा) करते हैं; **(देवाः)** अग्नि, वायु, सूर्य, सोम आदि देवता जिसकी आज्ञा का पालन करते हैं। **(यस्य छाया अमृतं)** जिसकी कृपापूर्ण छाया जीवन है और **(यस्य छाया मृत्युः)** मृत्यु भी जिसकी कृपा ही है, **(कस्मै देवाय हविषा विधेम)** वह कौन सा परम देव है, जिसके लिए हम पूजा की आहुतियां प्रस्तुत करें?

अग्ने नय सुपथ राये ऽ अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम।
(यजु. ४०.११)

(अग्ने) हे अग्नि देव, **(अस्मान् सुपथा राये नय)** हमें सुमार्ग पर चलाते हुए ऐश्वर्य की ओर ले चल। **(विश्वानि वयुनानि विद्वान्)** तू हमारे सब कर्मों अपकर्मों को जानता है। **(जुहुराणं एनः अस्मत्**

युयोधि) कुटिलतापूर्ण पाप को हमसे अलग कर दे। **(ते भूयिष्ठां नमः उक्तिं विधेम)** हम तुझे बार-बार प्रणाम करते हैं।

आचमन—इसके पश्चात् निम्नलिखित तीन मंत्रों से एक एक आचमन करें। यदि रोगी भी आचमन और अंग स्पर्श करने की स्थिति में हो, तो करे।

ओ३म् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।

(अमृतं उपस्तरणं असि) तू हमारा अमृत रूप बिछौना है।

ओ३म् अमृतापिधानमसि स्वाहा।

(अमृतं अपिधानं असि) तू हमारा अमृत रूप ओढ़ना (चादर) है।

ओ३म् सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा।

(सत्यं यशः श्रीः) सत्य, यश और श्री **(मयि)** मुझ में **(श्री)** कान्ति, शोभा, वैभव भर दें।

अंग स्पर्श—इसके बाद इन मंत्रों से अंग स्पर्श करें :

ओ३म् वाङ्म आस्येऽस्तु।

(मे आस्ये) मेरे मुख में **(वाक् अस्तु)** वाणी हो।

ओ३म् नसोऽर्मे प्राणोऽस्तु।

(मे नसोः प्राणः अस्तु) मेरी दोनों नासिकाओं में प्राण वायु चलता रहे।

ओ३म् अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु।

(मे अक्ष्णोः) मेरी दोनों आंखों में **(चक्षुः अस्तु)** देखने की शक्ति बनी रहे।

ओ३म् कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु।

(मे कर्णयोः) मेरे दोनों कानों में **(श्रोत्रं अस्तु)** सुनने की शक्ति बनी रहे।

ओ३म् बाह्वोर्मे बलमस्तु।

(मे बाह्वो:) मेरी दोनों बांहों में **(बलं अस्तु)** बल हो।

ओ३म् ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु।

(मे ऊर्वो:) मेरी दोनों जांघों में **(ओजः अस्तु)** ओज भरा हो।

ओ३म् अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु।

(मे तनू:) मेरा शरीर और **(तन्वा सह मे अङ्गानि)** शरीर के साथ साथ मेरे सब अंग **(अरिष्टानि सन्तु)** निर्दोष, स्वस्थ होवें।

अग्नि प्रज्वलन—इसके बाद हवन कुंड में नीचे लिखे मंत्र को बोलते हुए अग्नि प्रज्वलित करें और घी की आहुति दें।

ओ३म् भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा।
तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे।
(यजु. ३.५)

(भू:) सत्, **(भुव:)** चित्, **(स्व:)** आनन्द! **(भूम्ना द्यौः इव)** विशालता में द्यु लोक जैसी और **(वरिम्णा पृथिवी इव)** विस्तार में पृथ्वी के समान (अपने समान आप, अनुपम) **(पृथिवी)** यह पृथ्वी है। **(देवयजनि)** हे देवो की यज्ञ भूमि पृथ्वी, **(तस्याः ते पृष्ठे:)** वैसी तुझ पृथ्वी की पीठ (इस यज्ञ वेदी) पर **(अन्नाद्याय)** अन्न खा सकने के लिए **(अन्नादं)** मैं अन्न के खाने और पचाने वाले **(अग्निं आदधे)** अग्नि को स्थापित करता हूं।

ओ३म् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते सँसृजेथामयं च।
अस्मिन् सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।

(अग्ने) हे अग्नि, **(उद्बुध्यस्व)** तुम जागो (प्रज्वलित होवो)। **(प्रति जागृहि)** औरों को भी जगाओ। **(त्वं अयं च)** तुम और यह यजमान **(इष्ट)** पारलौकिक हितकारी कार्य, और **(पूर्त)** इहलौकिक परोपकारी कर्मों को **(संसृजेथाम्)** मिल कर निष्पन्न करो। **(अस्मिन् सधस्थे)** इस यज्ञ स्थल में और **(उत्तरस्मिन् अधि)** इसके बाद वालों में भी **(विश्वे देवा:)** सब देव गण **(यजमानश्च)** और यजमान

(सीदत) मिल कर साथ बैठें।

ओ३म् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा।

(जातवेदः) हे जातवेदस् अग्नि, **(अयं आत्मा ते इध्म)** मेरा यह आत्मा तेरा ईंधन है। **(तेन इध्यस्व)** मेरे इस आत्मा रूपी ईंधन से तू धधक, भड़क; **(वर्धस्व)** खूब बढ़; **(च इत् ह)** और निश्चय ही **(अस्मान्)** हमको भी **(प्रजया)** सन्तान से, **(पशुभिः)** पालतू पशु, गौ, अश्व, अजा और अवि से, **(ब्रह्मवर्चसेन)** ज्ञान और बुद्धि के बल से, **(अन्नाद्येन)** खाद्य अन्नों से **(समेधय)** समृद्ध बना। **(स्वाहा)** यह आहुति तेरे लिए है।

जल प्रोक्षण—इसके बाद हवन कुण्ड के चारों ओर इन मंत्रों से जल छिड़कें, जिससे छिटक कर गिरने वाली चिनगारियां हानि न कर सकें।

ओ३म् अदितेऽनुमन्यस्व।

(अदिते) हे अदिति, **(अनुमन्यस्व)** मेरी कामनाओं को पूरा होने की स्वीकृति दीजिये।

ओ३म् अनुमतेऽनुमन्यस्व।

(अनुमते) हे अनुमति, **(अनुमन्यस्व)** मेरी कामनाओं को पूरा होने की स्वीकृति दीजिये।

ओ३म् सरस्वत्यनुमन्यस्व।

(सरस्वति) हे सरस्वती, **(अनुमन्यस्व)** मेरी कामनाओं को पूरा होने की स्वीकृति दीजिये।

ओ३म् देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय।
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु।
(यजु.३०.११)

(देव सवितः) हे सृष्टि के प्रेरक सविता देव, **(यज्ञं प्रसुव)** इस

यज्ञ को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कीजिये। **(यज्ञपतिं भगाय प्रसुव)** यजमान को ऐश्वर्य की ओर बढ़ाइये। **(दिव्यः केतपूः गन्धर्वः)** दिव्य गुणों वाला, घरों को पवित्र करने वाला गन्धर्व सूर्य **(केतं नः पुनातु)** हमारे घर को पवित्र करे और **(वाचस्पतिः)** वाणी का स्वामी **(नः वाचं स्वदतु)** हमारी वाणी को स्वादिष्ट **(मधुर)** बनाये।

महामृत्युञ्जय आहुतियां—इसके बाद निम्नलिखित मंत्रों से महामृत्युंजय यज्ञ की आहुतियां दें। ये आहुतियां घी और सामग्री दोनों से दी जायें।

महामृत्युञ्जय यज्ञ के मंत्र

अन्तकाय मृत्यवे नमः प्राणा अपाना इह ते रमन्ताम्।
इहायमस्तु पुरुषः सहासुना सूर्यस्य भागे अमृतस्य लोके।
(अथर्व ८.१.१)

(अन्तकाय) जीवन का अन्त करने वाले **(मृत्यवे)** मृत्यु को **(नमः)** हमारा प्रणाम है। (हम उसके आगे सिर झुकाते हैं)। **(ते प्राणाः अपानाः)** तेरे प्राण और अपान (जीवन को बनाये रखने वाले श्वास और प्रश्वास; अथवा नासिका से आने वाले श्वास और मलद्वार से निकलने वाला अपान वायु) **(इह रमन्ताम्)** तेरे इस शरीर में ठीक ढंग से चलते रहें। **(अयं पुरुषः)** यह व्यक्ति, नर या नारी, **(असुना सह इह अस्तु)** अपने जीव सहित इस शरीर में ही रहे। **(सूर्यस्य भागे)** सूर्य वाले भाग में (प्रकाश, उष्णता, और सुख देने वाले भाग में) और **(अमृतस्य लोके)** न मरने वालों के लोक में, जीवित व्यक्तियों के बीच में बना रहे।

उदेनं भगो अग्रभीदुदेनं सोमो अंशुमान्।
उदेनं मरुतो देवा उदिन्द्राग्नी स्वस्तये। (८.१.२)

(एनं भगः उद् अग्रभीत्) इसे भग देव ने पकड़ कर विपत्ति में से ऊपर निकाल लिया है। **(अंशुमान् सोमः एनं उद् अग्रभीत्)** जीवनदायिनी किरणों वाले सोम ने इसे विपत्ति में से ऊपर निकाल लिया

है। **(मरुतो देवाः एनं उत्)** मरुत् देवों ने इसे विपत्ति में से उबारा है। **(इन्द्राग्नी स्वस्तये उत्)** इन्द्र और अग्नि देवों ने कल्याण के लिए इसे महाविपत्ति में से उबारा है।

इह ते ऽसुरिह प्राण इहायुरिह ते मनः।
उत त्वा निर्ऋत्या पाशेभ्यो दैव्या वाचा भरामसि। ८.१.३

(ते असुः इह) तेरा जीव यहां है। **(ते प्राणः इह)** तेरा जीवनदायी प्राण (श्वासोच्छ्वास) यहां है। **(ते आयुः ते मनः इह)** तेरी आयु और तेरा मन यहां है। **(उत त्वा)** और हम तुझको **(दैव्या वाचा)** दिव्य वाणी अर्थात् पवित्र वेद मंत्रों द्वारा **(निर्ऋत्या पाशेभ्यो भरामसि)** निर्ऋति अर्थात् व्याधि के पाश अर्थात् जाल से छुड़ाते हैं।

उत्क्रामातः पुरुष मावपत्थाः मृत्योः पड्वीशमवमुञ्चमानः।
मा च्छित्था अस्माल्लोकादग्नेः सूर्यस्य संदृशः। ८.१.४

(पुरुष) हे मनुष्य (नर या नारी), **(अतः उत्क्राम)** इस रोग की दशा से ऊपर की ओर उठ। **(मृत्योः पड्वीशं)** मृत्यु की बेड़ी को **(अवमुञ्चमानः)** तोड़ कर फेंकता हुआ तू **(मा अवपत्थाः)** नीचे की ओर कभी मत गिरना। **(सूर्यस्य संदृशः)** सूर्य का दर्शन जहां से होता रहता है, वहां स्थित **(अस्मात् अग्ने लोकात्)** अग्नि के इस लोक से तू **(मा छित्थाः)** कदापि अलग मत होना।

तुभ्यं वातः पवतां मातरिश्वा तुभ्यं वर्षन्त्वमृतान्यापः।
सूर्यस्ते तन्वे शं तपाति त्वां मृत्युर्दयतां मा प्रमेष्ठाः।
८.१.५

(तुभ्यं मातरिश्वा पवताम्) तेरे लिए जीवनदायक पवन बहे और वह तेरे रोगों को छान दे। **(तुभ्यं आपः अमृतानि वर्षन्तु)** जल तेरे लिए अमृत बन कर बरसें। **(सूर्यः ते तन्वे शं तपाति)** सूर्य तेरे शरीर को कल्याणकारी, नीरोग करने वाली धूप से गर्म रखे। **(मृत्युः त्वा दयतां)** मृत्यु तुझ पर दया करे। **(मा प्रमेष्ठाः)** तुझे मरना नहीं है।

उद्यानं ते पुरुष नावयानं जीवातुं ते दक्षतातिं करोमि।
आ हि रोहेममृतं सुखं रथमथ जिर्विर्विदथमावदासि।८.१.६

(पुरुष) हे मनुष्य, **(ते उद्यानं)** तुझे ऊपर ही ऊपर उठना है, **(अव यानं न)** तुझे नीचे बिल्कुल नहीं गिरना। **(ते जीवातुं)** मैं तेरे जीवन को **(दक्षतातिं करोमि)** सब दक्षताओं से सम्पन्न बनाता हूं। **(हि इमं अमृतं सुखं रथं आरोह)** मृत्यु से छुटकारा पाने के इस अत्यन्त सुखदायक रथ पर सवार हो जा और इसके बाद **(जिर्विः विदथं आ वदासि)** वृद्धावस्था को प्राप्त करके ज्ञान की बातें लोगों को बता।

मा ते मनस्तत्र गान्मा तिरोभून्मा जीवेभ्यः प्रमदो मानुगाः पितॄन् विश्वेदेवा अभिरक्षन्तु त्वेह। ८.१.७

(ते मनः तत्र मा गात्) तेरा मन उस परलोक की ओर न जाये। **(मा तिरो भूत्)** तू इस लोक से ओझल मत हो। **(जीवेभ्यः मा प्रमदः)** जीवित सगे सम्बन्धियों के प्रति प्रमाद मत कर अर्थात् उनके प्रति स्नेह को त्याग मत। **(पितॄन् मा अनुगाः)** परलोक चले गये पितरों **(पूर्वजों)** का अनुगमन मत कर। **(त्वा विश्वे देवाः इह अभिरक्षन्तु)** सभी देवता तुझे इस लोक में सब प्रकार सुरक्षित बनाये रखें।

मा गतानामादीधीथा ये नयन्ति परावतम्।
आरोह तमसो ज्योतिरेह्या ते हस्तौ रभामहे। ८.१.८

(गतानां) जो पर लोक चले गये हैं, **(मा आदीधीथाः)** उनका ध्यान मत कर, और न उनका **(ये परावतं नयन्ति)** जो परलोक की की ओर ले जाते हैं। **(तमसो ज्योतिः आरोह)** अन्धकार की खाई में से चढ़ कर यहां ऊपर प्रकाश के शिखर पर आ जा। **(एहि ते हस्तौ आरभामहे)** आ, हम तेरे दोनों हाथ पकड़ कर तुझे ऊपर आने के लिए सहारा देते हैं।

श्यामश्च त्वा मा शबलश्च प्रेषितौ यमस्य यौ पथरक्षी श्वानौ।
अर्वाङेहि मा विदीध्यो मात्र तिष्ठ पराङ्मनाः। ८.१.९

(यमस्य) मृत्यु के देवता यमराज के **(यौ प्रेषितौ)** जो भेजे हुए **(श्यामश्च शबलश्च)** काला और चितकबरा, दो **(श्वानौ)** कुत्ते हैं, वे **(त्वा मा)** तुझे मत ले जायें। **(अर्वाङ् एहि)** यहां नीचे पृथ्वी पर ही लौट आ। **(मा विदीध्यः)** दुविधा में मत पड़। **(पराङ्मनाः अत्र मा तिष्ठ)** परलोक जाने का मन बना कर यहां मत खड़ा रह।

मैतं पन्थामनुगा भीम एष येन पूर्वं नेयथ तं ब्रवीमि।
तम एतत् पुरुष मा प्रपत्था भयं परस्तादभयं ते अर्वाक्। ८.१.१०

(एतं पन्थां मा अनुगाः) इस मार्ग का अनुगमन मत कर। **(भीम एषः)** यह डरावना है। **(येन पूर्वं न इयथ, तं ब्रवीमि)** जिस मार्ग पर तू पहले कभी नहीं गया है, उसकी बात कह रहा हूं। **(एतत् तमः)** यह अन्धकार ही अन्धकार है। **(पुरुष)** हे मनुष्य, **(मा प्रपत्थाः)** इस पर आगे पैर मत बढ़ा। **(परस्तात् भयं)** उस परले पार भय ही भय है, **(अर्वाक् ते अभयं)** यहां इस पार तेरे लिए कोई भय नहीं है।

रक्षन्तु त्वाग्नयो ये अप्स्वन्ता रक्षतु त्वा मनुष्या यमिन्धते।
वैश्वानरो रक्षतु जातवेदा दिव्यस्त्वा मा प्र धाग् विद्युता सह।।
८.१.११

वे **(अग्नयः त्वां रक्षन्तु)** अग्नियां तेरी रक्षा करें, **(ये अप्सु अन्तः)** जो जलों के अन्दर विद्यमान हैं। **(यं मनुष्याः इन्धते)** जिस अग्नि को मनुष्य (रसोईघर में या यज्ञशाला में) प्रज्वलित करते हैं, वह **(त्वां रक्षतु)** तेरी रक्षा करे। **(वैश्वानरः जातवेदाः)** सब मनुष्यों के अन्दर विद्यमान जातवेदस् अग्नि **(त्वां रक्षतु)** तेरी रक्षा करे। **(दिव्यः विद्युता सह मा प्रधाक्)** द्यु लोक में विद्यमान अग्नि अर्थात् सूर्य विद्युत् के साथ तुझे न जला डाले।

मा त्वा क्रव्यादभिमंस्तारात् संकसुकाच्चर।
रक्षतु त्वा द्यौ रक्षतु पृथिवी सूर्यश्च त्वा रक्षतां चन्द्रमाश्च।
अन्तरिक्षं रक्षतु देवहेत्या। ८.१.१२

(क्रव्याद्) मांस को खाने वाला अग्नि (चिता की आग)

(त्वां मा अभिमंस्त) तुझे किसी प्रकार की हानि न पहुंचाये। **(संकसुकात् आरात्चर)** विनाश करने वाले से दूर ही रह। **(त्वां द्यौः रक्षतु)** द्युलोक तेरी रक्षा करे। **(पृथिवी त्वां रक्षतु)** पृथ्वी तेरी रक्षा करे। **(सूर्यश्च चन्द्रमाश्च त्वा रक्षताम्)** सूर्य और चन्द्रमा तेरी रक्षा करें। **(अन्तरिक्षं देवहेत्या रक्षतु)** अन्तरिक्ष देवताओं के अस्त्र से तेरी रक्षा करे।

बोधश्च त्वा प्रतीबोधश्च रक्षतामस्वप्नश्च त्वानवद्राणश्च रक्षताम्।
गोपायंश्च त्वा जागृविश्च रक्षताम्। ८.१.१३

(बोधश्च) चेतना और **(प्रतीबोधश्च)** लौटी हुई चेतना, तेरी रक्षा करें। **(अस्वप्नश्च)** परिचारकों का न सोना और **(अनवद्राणश्च)** न ऊंघना **(त्वा रक्षताम्)** तेरी रक्षा करें। **(गोपायंश्च)** हर प्रकार की रखवाली और **(जागृविश्च)** दिन रात जागरूकता **(त्वां रक्षताम्)** तेरी रक्षा करें।

ते त्वा रक्षन्तु ते त्वा गोपायन्तु तेभ्यो नमस्तेभ्यः स्वाहा। ८.१.१४

(ते) वे सभी **(त्वा रक्षन्तु)** तेरी रक्षा करें। **(ते त्वा गोपायन्तु)** वे सभी तेरी रखवाली करें।**(तेभ्यः नमः)** उनको हमारा नमन है। **(तेभ्यः स्वाहा)** उनके लिए यह सुन्दर आहुति है।

जीवेभ्यस्त्वा समुदे वायुरिन्द्रो धाता दधातु सविता त्रायमाणः।
मा त्वा प्राणो बलं हासीदसुं तेऽनु ह्वयामसि। ८.१.१५

(त्वा) तुझको **(वायुः इन्द्रः धाता त्रायमाणः सविता)** वायु, इन्द्र, धाता और कष्टों से मुक्ति दिलाने वाला सविता **(जीवेभ्यः)** जीवन शक्ति बढ़ाने के लिए **(समुदे दधातु)** प्रसन्न दशा में रखे। **(त्वा)** तुझको **(प्राणः बलं मा हासीत्)** प्राण और बल छोड़ कर न जायें। **(असुं ते अनु ह्वयामसि)** हम तेरे जीव को फिर वापस बुलाते हैं।

मा त्वा जम्भः संहनुर्मा तमो विदन् मा जिह्वा बर्हिः प्रमयुः कथा स्याः।
उत् त्वा आदित्या वसवो भरन्तूदिन्द्राग्नी स्वस्तये। ८.१.१६

(त्वा जम्भः मा संहनुः) तुझे मृत्यु की दाढ़ पीस न डाले। **(त्वा तमो मा विदत्)** अन्धकार तुझे घेर न ले। **(बर्हिः जिह्वा कथा प्रमयुः स्याः)** चुभने वाली जिह्वा किसी प्रकार तुझसे दूर ही रहे। **(त्वा आदित्याः वसवः इन्द्राग्नी स्वस्तये उत् भरन्तु)** तुझे आदित्य, वसु, इन्द्र और अग्नि देव स्वस्थ करने के लिए कष्ट से उबारें।

उत् त्वा द्यौरुत् पृथिव्युत् प्रजापतिरग्रभीत्।
उत् त्वा मृत्योरोषधयः सोमराज्ञीरपीपरन्। ८.१.१७

(त्वा द्यौः उत् अग्रभीत्) तुझे द्यु लोक ने पकड़ कर उबारा है। **(त्वा पृथिवी, प्रजापतिः उत् अग्रभीत्)** तुझे पृथ्वी ने और प्रजापति ने पकड़ कर संकट से उबारा है। **(सोमराज्ञीः ओषधयः त्वा मृत्योः अपीपरन्)** जिनका राजा सोम है, उन ओषधियों ने तुझे मृत्यु के चंगुल से छुड़ाया है।

अयं देवा इहैवास्त्वयं मामुत्र गादितः।
इमं सहस्रवीर्येण मृत्योरुत् पारयामसि। ८.१.१८

(देवाः) हे देवताओ, **(अयं)** यह मनुष्य **(इह एव अस्तु)** यहीं रहे। **(अतः अमुत्र मा गात्)** यहां से वहां न जाये। **(इमं सहस्रवीर्येण)** इसे हम सहस्रवीर्य औषधों के द्वारा **(मृत्योः उत्पारयामसि)** मृत्यु के भंवर से ऊपर निकाल लेते हैं।

उत् त्वा मृत्योरपीपरं संधमन्तु वयोधसः।
मा त्वा व्यस्तकेश्यो३ मा त्वाघरुदो रुदन्। ८.१.१९

(त्वा) तुझको मैंने **(मृत्योः उत् अपीपरं)** मृत्यु के चंगुल से ऊपर खींच लिया है। **(वयोधसः संधमन्तु)** आयु को बढ़ाने वाले अंग धड़कना शुरू करें। **(व्यस्तकेश्यः अघरुदः मा रुदन्)** बाल बखेरे मृत्यु का रुदन करने वाली स्त्रियां तेरे लिए विलाप न करें।

आहार्षमविदं त्वा पुनरागाः पुनर्णवः।
सर्वाङ्ग सर्वं ते चक्षुः सर्वमायुश्च तेऽविदम्। ८.१.२०

(त्वा आहार्षं) मैं तुझे वापस ले आया हूं और **(त्वा अविदं)** मैंने

तुझे बचा लिया है। तू **(पुनः नवः)** फिर नया हो कर **(पुनः आ आगः)** पुनः लौट आया है। **(सर्वांग)** हे सम्पूर्ण अंगों वाले मनुष्य, **(सर्व ते चक्षुः)** तेरी सारी दर्शन शक्ति और तेरी सारी **(आयुः)** आयु **(अविदम्)** मैं वापस ले आया हूं।

व्यवात् ते ज्योतिरभूदप त्वत् तमो अक्रमीत्।
अप त्वन्मृत्युं निर्ऋतिमप यक्ष्मं निदध्मसि। ८.१.२१

(ते ज्योतिः अवात् वि अभूत्) तेरी जो जीवन ज्योति दूर चली गई थी, वह फिर प्रकट हो गई है। **(तमः त्वत् अपक्रमीत्)** मृत्यु का अन्धकार तुझसे दूर भाग गया है। हमने **(त्वत्)** तुझसे **(मृत्युं निर्ऋतिं यक्ष्मं अप नि दध्मसि)** मृत्यु को, रोगजनित दुर्दशा को और यक्ष्मा (क्षय) को परे धकेल दिया है।

आरभस्वेमाममृतस्य श्नुष्टिमच्छिद्यमाना जरदष्टिरस्तु ते।
असुं त आयुः पुनराभरामि रजस्तमोमोप गा मा प्रमेष्ठाः। ८.२.१

(इमां अमृतस्य श्नुष्टिं आ रभस्व) नये जीवन की इस प्राप्ति को उत्साह से आरम्भ कर। **(ते जरदष्टिः)** वृद्धावस्था तक तेरी दीर्घ आयु **(अच्छिद्यमाना अस्तु)** अटूट बनी रहे। **(ते असुं आयुः)** मैं तेरे जीव और आयु को **(पुनः आ भरामि)** फिर से तुझ में भर देता हूं। **(रजः तमः मा उप गाः)** तू रजोगुण और तमोगुण के निकट मत जा। **(मा प्रमेष्ठाः)** तुझे मरना नहीं है।

जीवतां ज्योतिरभ्येह्यर्वाङ् त्वा हरामि शतशारदाय।
अवमुञ्चन् मृत्युपाशानशस्तिं द्राघीय आयुः प्रतरं ते दधामि।
८.२.२

तू **(जीवतां ज्योतिः अभि एहि)** जीवित लोगों की ज्योति की ओर लौट आ। **(त्वा शतशारदाय अर्वाङ् आहरामि)** तुझे मैं सौ वर्षों के लिए वापस बुला रहा हूं। **(मृत्युपाशान्)** मृत्यु के जालों और **(अशस्तिं)** शोचनीय दशा से तुझे छुड़ा कर मैं **(ते)** तुझे **(प्रतरं द्राघीयः आयुः दधामि)** बहुत लम्बा आयुष्य प्रदान कर रहा हूं।

वातात् ते प्राणमविदं सूर्याच्चक्षुरहं तव।
यत् ते मनस्त्वयि तद् धारयामि संवित्स्वाङ्गैर्वद जिह्वयालपन्।
८.२.३

(वातात् ते प्राणं अविदं) मैंने वायु से तेरे श्वासोच्छ्वास प्राप्त किये हैं; **(सूर्यात् तव चक्षुः अविदम्)** सूर्य से तेरी दृष्टि शक्ति प्राप्त की है। **(यत् ते मनः तत् त्वयि धारयामि)** तेरा जो यह मन है, उसे तुझमें फिर दृढ़ता से स्थापित करता हूं। **(अंगैः संवित्स्व)** अपने अंगों से यथावत् काम काज शुरू कर और **(जिह्वया आलपन् वद)** जिह्वा से भलीभांति बोलना शुरू कर।

प्राणेन त्वा द्विपदां चतुष्पदामग्निमिव जातमभि सं धमामि।
नमस्ते मृत्यो चक्षुषे नमः प्राणाय तेऽकरम्। ८.२.४

(त्वा) तुझे मैं **(द्विपदां चतुष्पदां प्राणेन)** दोपायों और चौपायों की प्राण शक्ति से सब ओर से उसी प्रकार **(संधमामि)** सुलगाता हूं, **(जातं अग्निं इव)** जिस प्रकार नये उत्पन्न हुए अग्नि को फूंक मार कर सुलगाते हैं। **(मृत्यो)** हे मृत्यु, मैं **(ते नमः)** तुझे प्रणाम करता हूं, **(चक्षुषे)** जिससे इसे दृष्टि शक्ति और **(प्राणाय)** प्राण शक्ति प्राप्त हो जाये।

अयं जीवतु मा मृतेमं समीरयामसि।
कृणोम्यस्मै भेषजं मृत्यो मा पुरुषं वधीः। ८.२.५

(अयं जीवतु) यह जीता रहे; **(मा मृत)** मरे नहीं। **(इमं समीरयामसि)** इसमें हम प्राणसंचार करते हैं। **(अस्मै भेषजं कृणोमि)** मैं इसे औषध दे रहा हूं। **(मृत्यो पुरुषं मा वधीः)** हे मृत्यु, इस व्यक्ति को मारना मत।

जीवलां नघारिषां जीवन्तीमोषधीमहम्।
त्रायमाणां सहमानां सहस्वतीमिह हुवे स्मा अरिष्टतातये।
८.२.६

(अहं जीवलां) मैं जीवन रक्षक, **(नघारिषां)** कोई हानि न

पहुंचाने वाली **(त्रायमाणां)** कष्टों से बचाने वाली **(सहमानां)** रोगों को हरा देने वाली **(सहस्वतीं)** अत्यन्त शक्तिशाली **(जीवन्तीं)** जीवन्ती नामक ओषधि को **(इह हुवे)** यहां मंगा रहा हूं, जिससे **(अस्मै अरिष्टतातये)** इस मनुष्य का रोग शान्त हो जाये और स्वास्थ्य बढ़े।

अधि ब्रूहि मा रभथाः सृजेमं तवैव सन्त्सर्वहाया इहास्तु।
भवाशर्वौ मृडतं शर्म यच्छतमपसिध्य दुरितं धत्तमायुः।

८.२.७

(अधि ब्रूहि) सान्त्वना के वचन बोल। **(मा आ रभथाः इमं)** इसे पकड़ मत; **(सृज)** छोड़ दे। **(सर्वहाया)** सब कुछ छोड़ कर यह **(तवैव सन् इह अस्तु)** तेरा ही हो कर यहां रहे। **(भवा शर्वौ)** सृजन और संहार के देव भव और शर्व, **(मृडतं)** तुम दोनों प्रसन्न होवो; **(शर्म यच्छतं)** इस मनुष्य को चैन दो। **(दुरितं अपसिध्य)** रोग को बाहर निकाल कर **(आयुः धत्तम्)** इसे लम्बी आयु प्रदान करो।

अस्मै मृत्यो अधिब्रूहीमं दयस्वोदितोऽयमेतु।
अरिष्टः सर्वांगः सुश्रुज्जरसा शतहायन आत्मना भुजमश्नुताम्।

८.२.८

(मृत्यो) हे मृत्यु, **(अस्मै अधिब्रूहि)** इस मनुष्य को सान्त्वना दे। **(इमं दयस्व)** इस पर दया कर। **(अयं)** यह **(इतः)** इस दशा से **(उत् एतु)** उबर जाये। **(अरिष्टः)** बिना कोई क्षति उठाये **(सर्वाङ्गः)** सभी अविकल अंगों के साथ **(सुश्रुत्)** कानों से भली भांति सुनता हुआ **(जरसा शतहायनः)** वृद्धावस्था में सौ वर्ष तक **(आत्मना)** अपने आप **(भुजं अश्नुताम्)** जीवन का उपभोग करे।

परिधि स्थापन—निम्नलिखित मंत्र पढ़ कर रोगी की शय्या के चारों ओर अलग अलग आठ खूंटियां रख कर (परिधि) घेरा बना दें। छह छह अंगुल लम्बी खूंटियां इस प्रकार रखी जायें कि वे अपने सहारे टिकी रहें।

देवानां हेतिः परि त्वा वृणक्तु पारयामि त्वा रजस उत् त्वा

मृत्योरपीपरम्।
आरादग्निं क्रव्यादं निरूहं जीवातवे ते परिधिं दधामि। ८.२.९

(देवानां हेतिः) देवताओं का प्रहार करने वाला शस्त्र **(त्वा परिवृणक्तु)** तुझसे दूर ही रहे। **(त्वा रजसः पारयामि)** मैं तुझे रजोगुण के पार पहुंचा देता हूं। **(त्वा मृत्योः उत् अपीपरम्)** मैंने तुझे मृत्यु से बचा लिया है। **(क्रव्यादं अग्निं)** कच्चा मांस खाने वाली चिताग्नि को **(आराद् निरूहं)** मैं दूर हटा कर **(ते जीवातवे)** तेरे जीवन के लिए **(परिधिं दधामि)** यह एक परिधि अर्थात् रक्षक घेरा बना रहा हूं।

यत् ते नियानं रजस मृत्यो अनवधर्ष्यम्।
पथ इमं तस्मात् रक्षन्तो ब्रह्मास्मै वर्म कृण्मसि। ८.२.१०

(मृत्यो) हे मृत्यु, **(ते यत् रजस अनवधर्ष्यम् नियानं)** तेरा जो इस संसार में अटल अनुल्लंघनीय मार्ग है, **(तस्मात् पथः)** उस पथ से **(इमं रक्षन्तः)** इस मनुष्य की रक्षा के लिए **(ब्रह्मवर्मकृण्मसि)** हम प्रार्थना का कवच बना रहे हैं। (संसार में मृत्यु का नियम अटल है, परन्तु प्रार्थना के कवच द्वारा उसे कुछ काल के लिए टाला जा सकता है। अकाल मृत्यु से बचा जा सकता है।)

कृणोमि ते प्राणापानौ जरां मृत्युं दीर्घमायुः स्वस्ति।
वैवस्वतेन प्रहितान् यमदूतांश्चरतोपसेधामि सर्वान्। ८.२.११

मैं **(ते प्राणापानौ करोमि)** तेरे प्राण और अपान को ठीक करता हूं। **(जरां मृत्युं दीर्घ आयुः)** तेरे लिए वृद्धावस्था में मृत्यु की और लम्बी आयु की व्यवस्था करता हूं। **(स्वस्ति)** तेरा कल्याण हो। **(वैवस्वतेन)** यमराज द्वारा **(प्रहितान्)** भेजे गये **(चरतः)** यहां घूमते फिरते **(सर्वान् यमदूतान्)** सभी यमदूतों को **(अपसेधामि)** मैं दूर भगा दे रहा हूं।

आरादरातिं निर्ऋतिं परो ग्राहिं क्रव्यादः पिशाचान्।
रक्षो यत् सर्वं दुर्भूतं तत् तम इवाप हन्मसि। ८.२.१२

(अरातिं) कंजूसी को **(निर्ऋतिं)** दुर्गति को **(आरात्)** हम दूर करते हैं और **(ग्राहिं)** जकड़ लेने वाले रोगों **(क्रव्यादः पिशाचान् रक्षः)** कच्चा मांस खाने वाले पिशाचों और राक्षसों को और **(यत् सर्वं दुर्भूतं)** जो जो भी दुष्ट तत्व हैं, **(तत् सर्वं)** उन सब को हम **(तम इव अप हन्मसि)** अन्धकार की भांति मार मार कर भगा दे रहे हैं।

अग्नेष्टे प्राणममृतादायुष्मतो वन्वे जातवेदसः।
यथा न रिष्या अमृत सजूरसस्तत् ते कृणोमि तदु ते समृध्यताम्।
८.२.१३

(ते प्राणं) तेरे प्राणों को मैंने **(अमृतात्)** अमरणशील, **(आयुष्मतः)** दीर्घ आयु वाले **(जातवेदसः)** सर्वज्ञ **(अग्नेः)** अग्नि से **(वन्वे)** मांग लिया है। **(यथा न रिष्याः)** जिससे तू मरे नहीं; **(अमृतः)** जीवित रहता हुआ तू **(सजूः असः)** सबके साथ प्रेम से मिल जुल कर रहे, **(तत् ते कृणोमि)** मैं तेरे लिए ऐसी व्यवस्था करता हूं। **(तत् उ ते समृध्यताम्)** तेरे लिए की गई वह व्यवस्था सफल हो।

शिवे ते स्तां द्यावापृथिवी असंतापे अभिश्रियौ।
शं ते सूर्य आ तपतु शं वातो वातु ते हृदे।
शिवा अभिक्षरन्तु त्वापो दिव्याः पयस्वतीः। ८.२.१४

(ते द्यावापृथिवी शिवे स्तां) तेरे लिए द्युलोक और पृथ्वी कल्याणकारी हों; **(असंतापे)** उनसे तुझे कोई कष्ट न मिले और **(अभिश्रियौ)** वे तेरी शोभा, कान्ति, वैभव को बढ़ायें। **(सूर्यः ते शं आतपतु)** सूर्य तुझे इस प्रकार गर्मी दे, जिससे तुझे चैन मिले। **(वातः ते हृदे शं वातु)** वायु तेरे हृदय में सुख पहुंचाता हुआ बहे। **(दिव्याः पयस्वतीः आपः त्वा शिवाः अभि क्षरन्तु)** दैवीय गुणों वाले, दूध जैसे गुणकारी जल तेरे हित के लिए तेरे आस पास बहते रहें।

शिवास्ते सन्त्वषोधयः उत् त्वाहार्षमधरस्या उत्तरां पृथिवीमभि।
तत्र त्वादित्यौ रक्षतां सूर्याचन्द्रमसावुभा। ८.२.१५

(ते ओषधयः शिवाः सन्तु) ओषधियां तेरे लिए हितकारी हों। **(त्वां अधरस्याः उत्तरां पृथिवीं अभि उत् आहार्ष)** मैं तुझे निचली भूमि से ऊपरली भूमि की ओर उठा लाया हूं। **(तत्र)** उस ऊपरली भूमि पर **(सूर्याचन्द्रमसौ उभौ आदित्यौ)** दोनों आदित्य, सूर्य और चन्द्रमा **(त्वा रक्षताम्)** तेरी रक्षा करें।

यत् ते वासः परिधानं यां नीविं कृणुषे त्वम्।
शिवं ते तन्वे ३ तत्कृण्मः संस्पर्शेऽद्रूक्ष्णमस्तु ते। ८.२.१६

(यस्ते वासः परिधानं) जिन वस्त्रों को तू पहनता है और **(यां नीविं कृणुषे त्वं)** और जिस मेखला को तू बांधता है, **(तत् ते तन्वे शिवं कृण्मः)** उसे हम तेरे शरीर के लिए सुखद बनाते हैं। **(संस्पर्शे ते अद्रूक्ष्णं अस्तु)** वह स्पर्श में तुझे खुरदरा न लगे अर्थात् कहीं चुभे नहीं।

यत् क्षुरेण मर्चयता सुतेजसा वप्ता वपसि केशश्मश्रु।
शुभं मुखं मा न आयुः प्रमोषीः। ८.२.१७

ओ **(वप्ता)** विश्व के नापित, तू जो **(सुतेजसा)** अत्यन्त पैने **(मर्चयता)** काटने वाले **(क्षुरेण)** उस्तरे से **(केशश्मश्रु)** बाल और दाढ़ी काटता है, वही तू हमारे **(शुभं मुखं)** सुन्दर मुख की कान्ति और **(आयुः)** आयु को **(मा प्रमोषीः)** मत छीन लेना।

शिवौ ते स्तां व्रीहियवावबलासावदोमधौ।
एतौ यक्ष्मं विबाधेते एतौ मुञ्चतो अंहसः। ८.२.१८

(ते व्रीहियवौ शिवौ स्तां) तेरे लिए धान और जौ हितकारी हों, जो **(अबलासौ)** शक्ति को क्षीण न होने देने वाले हैं और **(अदोमधौ)** खाने में स्वादिष्ट हैं। **(एतौ यक्ष्मं विबाधेते)** ये दोनों क्षय रोग को हटाते हैं और **(एतौ अंहसः मुञ्चतः)** ये दोनों रोग के कष्ट से छुटकारा दिला देते हैं।

यदश्नासि यत् पिबसि धान्यं कृष्याः पयः।
यदाद्यं १ यदनाद्यं सर्वं ते अन्नमविषं कृणोमि। ८.२.१६

(यत् कृष्याः धान्यं अश्नासि) तू खेती से उपजा जो कुछ भी

अन्न खाता है, **(यत् पयः पिबसि)** जो दूध पीता है, उसमें से **(यत् आद्यं)** जो खाने योग्य है और **(यत् अनाद्यं)** जो खाने योग्य नहीं है, **(सर्वं ते अन्नं अविषं कृणोमि)** उस सब अन्न को मैं तेरे लिए विषरहित किये देता हूं।

अह्ने च त्वा रात्रये चोभाभ्यां परि दद्मसि।
अरायेभ्यो जिघत्सुभ्यः इमं मे परिरक्षत। ३.२.२०

हम **(त्वा अह्ने रात्रये च उभाभ्यां परिदद्मसि)** तुझे दिन और रात, दोनों को सौंप देते हैं, कि **(मे इमं)** मेरे इस रोगी मनुष्य की **(अरायेभ्यः)** दया का दान न देने वाली और **(जिघत्सुभ्यः)** खा लेने की इच्छा रखने वाली दुष्ट शक्तियों से **(परिरक्षत)** भली भांति रक्षा करो।

शतं तेऽयुतं हायनानि द्वे युगे त्रीणि चत्वारि कृण्मः।
इन्द्राग्नी विश्वे देवास्तेनु मन्यन्तामहृणीयमानाः। ८.२.२१

हम **(ते शतं अयुतं हायनानि)** तेरे लिए सौ वर्ष, दस हज़ार वर्ष **(द्वे युगे)** दो युग **(त्रीणि चत्वारि)** तीन युग, चार युग तक के जीवन की व्यवस्था कर रहे हैं। **(इन्द्राग्नी)** इन्द्र और अग्नि तथा **(विश्वेदेवाः)** सब विश्व देव **(अहृणीयमानाः)** निःसंकोच हो कर **(ते)** तेरे लिए इतने दीर्घ जीवन की **(अनुमन्यन्ताम्)** अनुमति दें।

मणिबन्धन—इस मंत्र को पढ़ कर रोगी की बाईं भुजा पर 'वरण' की छाल का रक्षा कवच बांधें।

स्वस्तिदा विषाम्पतिर्वृत्रहा विमृधो वशी।
इन्द्रो बध्नातु ते मणिं जिगीवाँ अपराजितः सोमपा अभयंकरो वृषा। स त्वा रक्षतु सर्वतो दिवा नक्तं च विश्वतः। ८.५.२२

(स्वस्तिदाः) कल्याण प्रदान करने वाला, **(विशां पतिः)** सब प्रजाओं का स्वामी, **(वृत्रहा)** दुष्टों का संहार करने वाला **(विमृधः वशी)** शत्रुओं का दमन करके उन्हें अपने वश में करने वाला, **(जिगीवान्)** सदा विजय पाने वाला, **(अपराजितः)** सदा अपराजित, **(सोमपा)** सोम पान करने वाला **(अभयंकरः)** अभय प्रदान करने वाला

(वृषा) महाबली **(इन्द्रः)** इन्द्र **(ते मणिं बध्नातु)** तेरे रक्षा कवच बांधे। **(सः)** वह **(त्वा सर्वतः रक्षतु)** सब ओर से तेरी रक्षा करे; **(दिवा नक्तं च विश्वतः)** दिन में और रात में भी सब प्रकार तेरी रक्षा करे।

अयं मे वरणो मणिः सपत्नक्षयणो वृषा।
तेनारभस्व त्वं शत्रून् प्रमृणीहि दुरस्यतः। १०.३.१

(अयं मे वरणो मणिः) यह मेरा वरण वृक्ष की छाल का बना रक्षा कवच है, जो **(सपत्नक्षयणः)** शत्रुओं का नाश करने वाला और **(वृषा)** अत्यन्त शक्तिशाली है। **(तेन त्वं शत्रून् आरभस्व)** इससे तुम शत्रुओं पर आक्रमण कर दो और **(दुरस्यतः)** बुरा करने वालों (हानि पहुंचाने वालों) को **(प्रमृणीहि)** कुचल कर मार डालो।

इमं बिभर्मि वरणमायुष्मान्छतशारदः।
स मे राष्ट्रं च क्षत्रं च पशूनोजश्च मे दधात्। १०.३.१२

मैं **(शत शारदः)** सौ वर्षों की **(आयुष्मान्)** दीर्घ आयु वाला **(इमं वरणं बिभर्मि)** इस वरण वृक्ष से बने रक्षा कवच को धारण करता हूं। **(सः)** वह **(मे राष्ट्रं)** मेरे राजत्व और **(क्षत्रं च)** क्षात्र धर्म अर्थात् सेनापतित्व को **(पशून्)** पालतू पशुओं को और **(ओजश्च)** मेरे प्रताप को **(दधात्)** बढ़ाये।

यथा सूर्यो अतिभाति यथास्मिन् तेज आहितम्।
एवा मे वरणो मणिः कीर्तिं भूतिं नियच्छतु।
तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा। १०.३.१७

(यथा सूर्यो अतिभाति) जैसे सूर्य खूब दमकता है, **(यथा अस्मिन् तेजः आहितम्)** जिस प्रकार इसमें तेज भरा हुआ है, **(एवा)** उसी प्रकार **(वरणो मणिः)** वरण से बना रक्षा कवच **(मे कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु)** मुझे कीर्ति और धन सम्पत्ति प्रदान करे, **(तेजसा मा समुक्षतु)** मुझे तेज से उद्दीप्त करे और **(यशसा मा समनक्तु)** यश से मुझे सब ओर से आप्लावित कर दे।

नारियल जल का पान—यह मंत्र पढ़ कर नारियल तोड़ कर उसका ताज़ा पानी रोगी को यथारुचि पिलायें।

ओ३म् त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। यजु. ३.६०

हम **(त्र्यम्बकं यजामहे)** तीन आंख वाले नारियल का सेवन करते हैं, जो **(सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं)** सुगन्धित और पुष्टिवर्धक है। **(उर्वारुकमिव बन्धः-नात्)** जैसे खरबूज़ा पकने पर अपने आप डंठल से अलग हो जाता है, वैसे ही यह मनुष्य **(मृत्योः बन्धनात् मुक्षीय)** मृत्यु के बन्धन (पकड़) से छूट जाये और **(अमृतात् मा)** जीवन से पृथक् न हो।

शरदे त्वा हेमन्ताय वसन्ताय ग्रीष्माय परिदद्मसि।
वंर्षाणि तुभ्यं स्योनानि येषु वर्धन्त ओषधीः। अथर्व., ८.२.२२

हम **(त्वा)** तुझे **(शरदे, हेमन्ताय, वसन्ताय, ग्रीष्माय परिदद्मसि)** शरद् ऋतु, हेमन्त ऋतु, वसन्त ऋतु और ग्रीष्म ऋतु को सौंप रहे हैं। **(वर्षाणि)** वर्षा ऋतुएं **(ते स्योनानि सन्तु)** तेरे लिए सुखदायी हों, **(येषु ओषधीः वर्धन्ते)** जिनमें ओषधियां पनपती बढ़ती हैं।

मृत्युरीशे द्विपदां मृत्युरीशे चतुष्पदाम्।
तस्मात् त्वां मृत्योर्गोपतेरुद्भरामि स मा बिभेः। ८.२.२३

(मृत्युः द्विपदां ईशे) मृत्यु दो पांवों वाले प्राणियों का स्वामी है। **(मृत्युः चतुष्पदां ईशे)** मृत्यु चार पैरों वाले प्राणियों का स्वामी है। मैं **(त्वां तस्मात् मृत्योः गोपतेः)** तुझे उस पृथ्वी भर के स्वामी मृत्यु के चंगुल से **(उद् भरामि)** छुड़ा कर उबार ले रहा हूं। **(सः मा बिभेः)** वह तू अब डर मत।

सोऽरिष्ट न मरिष्यसि, न मरिष्यसि मा बिभेः।
न वै तत्र म्रियन्ते नो यन्त्यधमं तमः। ८.२.२४

हे **(अरिष्ट)** भले चंगे मनुष्य, **(सः त्वं न मरिष्यसि)** वह तू मरेगा नहीं, **(न मरिष्यसि)** बिल्कुल नहीं मरेगा। **(मा बिभेः)** डर मत। **(तत्र)** जहां (महामृत्युञ्जय यज्ञ की परिधि में) तू पहुंच गया है,

वहां **(न म्रियन्ते)** लोग मरते नहीं हैं, **(न अधमं तमः यन्ति)** न वे अधम अन्धकार में ही जाते हैं।

सर्वो वै तत्र जीवति गौरश्वः पुरुषः पशुः।
यत्रेदं ब्रह्म क्रियते परिधिर्जीवनाय कम्। ८.२.२५

(यत्र इदं ब्रह्म क्रियते) जहां यह प्रार्थना (महामृत्युंजय यज्ञ) की जाती है और **(जीवनाय कं परिधिः क्रियते)** जीवन के लिए सुखदायक यह रक्षक परिधि बनाई जाती है, वहां **(गौः अश्वः पुरुषः पशुः सर्वः जीवति)** गौ, घोड़ा, मनुष्य, पशु सब कोई जीवित रहते हैं; (कोई मरता नहीं है)।

परि त्वा पातु समानेभ्योऽभिचारात् सबन्धुभ्यः।
अमम्रिर्भवामृतोतिजीवो मा ते हासिषुरसवः शरीरम्। ८.२.२६

यह परिधि **(त्वा समानेभ्यो सबन्धुभ्यः अभिचारात् परिपातु)** साथी संगियों द्वारा और भाई बन्धुओं द्वारा किये जा रहे अभिचार (हानि पहुंचाने वाले प्रयोगों) से सब प्रकार तेरी रक्षा करे। **(अमम्रिः भव)** तू अमम्रि (मृत्यु का कभी विचार न करने वाला) बन; **(अमृतः)** अमर हो कर **(अतिजीवो भव)** सामान्य से अधिक जीने वाला बन। **(ते असवः)** तेरे प्राण **(शरीरं मा हासिषुः)** शरीर को त्यागें नहीं।

ये मृत्यवः एक शतं या नाष्ट्रा अतितार्याः।
मुञ्चन्तु तस्मात् त्वां देवा अग्नेर्वैश्वानरादधि। ८.२.२७

(ये एक शतं मृत्यवः) वे जो एक सौ मृत्युएं हैं, जो **(नाष्ट्राः)** नष्ट कर देने वाली हैं और **(याः अतितार्याः)** जिनसे बचा जा सकता है, **(देवाः)** देवगण **(त्वा)** तुझे **(तस्मात् वैश्वानरादग्नेः अधिमुञ्चन्तु)** उस सब मनुष्यों में विद्यमान आग (मृत्युओं) से तुझे छुटकारा दिलायें।

अग्नेः शरीरमसि पारयिष्णुः रक्षोहासि सपत्नहा।
अथो अमीवचातनः पूतुद्रुर्नाम भेषजम्। ८.२.२८

हे पूतुद्रु नामक औषध, **(अग्नेः शरीरमसि)** तुम अग्नि का शरीर

हो; **(पारयिष्णुः)** कष्ट से पार लगाने वाले हो; **(रक्षोहा असि)** राक्षसों का नाश करने वाले हो; **(सपत्नहा)** शत्रुओं का संहार करने वाले हो; **(अथो अमीवचातनः)** और रोग के कृमियों को मारने वाले हो।

रक्षोहणं वाजिनमाजिघर्मि मित्रं प्रथिष्ठं उपयामि शर्म। शिशानो अग्निः क्रतुभिः समिद्धः स नो दिवा स रिषः पातु नक्तम्। ८.३.१

मैं **(रक्षोहणं)** राक्षसों को मारने वाले **(वाजिनं)** शक्तिशाली अग्नि को **(आ जिघर्मि)** तीव्रता से प्रकट करता हूं। **(प्रथिष्ठं)** सबसे अधिक विख्यात **(मित्रं)** मित्र देव की **(शर्म उपयामि)** शरण में जाता हूं। **(शिशानो अग्निः)** धधकता हुआ अग्नि **(क्रतुभिः समिद्धः)** यज्ञों की आहुतियों से प्रचंड होता है। **(सः नः दिवा रिषः पातु)** वह हमें दिन में हिंसा (मृत्यु के कष्ट) से बचाये; **(सः नक्तं रिषः पातु)** वह हमें रात्रि में हिंसा से बचाये।

(यज्ञ के लिए जलाया जा रहा अग्नि दिन रात हमारी रक्षा करता रहे। मित्र (सूर्य) हमें अपनी शरण में ले ले)।

पश्चात् पुरस्तादधरादुतोत्तरात् कविः काव्येन परि पाह्यग्ने।
सखा सखायमजरो जरिम्णे अग्ने मर्ताँ अमर्त्यस्त्वं नः।

८.३.२०

(अग्ने) हे अग्नि, तू **(कविः)** क्रान्तदर्शी है; **(काव्येन)** अपनी क्रान्तदर्शिता से तू हमारी **(पश्चात्)** पीछे की ओर से, **(पुरस्तात्)** आगे की ओर से **(अधरात्)** नीचे की ओर से और **(उत्तरात् उत)** ऊपर की ओर से भी **(परि पाहि)** भली भांति रक्षा कर। **(अग्ने)** हे अग्नि, **(अजरः)** तू अजर है, **(जरिम्णे)** हम जराग्रस्त लोगों की, **(अमर्त्यः त्वं)** अमरणशील तू **(नः मर्तान्)** हम मरणशील लोगों की **(सखा सखायं)** मित्र की भांति मित्र की रक्षा कर।

(अजर अमर अग्नि हम जीर्ण मरणधर्मा लोगों की सब ओर से सब प्रकार से रक्षा करे, क्योंकि वह हमारा मित्र है।)

वर्म मे द्यावापृथिवी वर्माहर्वर्म सूर्यः।

वर्म मे इन्द्रश्चाग्निश्च वर्म धाता दधातु मे। ८.५.१८

(द्यावापृथिवी मे वर्म) द्युलोक और पृथ्वी मेरे रक्षक कवच बनें। **(वर्म अहः)** दिन मेरा रक्षक कवच बने। **(वर्म सूर्यः)** सूर्य मेरा रक्षक कवच बने। **(इन्द्रश्च अग्निश्च मे वर्म)** इन्द्र और अग्नि मेरे रक्षक कवच बनें। **(धाता मे वर्म दधातु)** धाता देव मुझे रक्षक कवच पहना दें।

अस्मिन्निन्द्रो निदधातु नृम्णमिमं देवासो अभिसंविशध्वम्।

दीर्घायुत्वाय शतशारदायायुष्मान् जरदष्टिर्यथासत्। ८.५.२१

(इन्द्रः) इन्द्र देव **(अस्मिन् नृम्णं निदधातु)** इस मनुष्य में बल व सुख का संचार करें। **(देवासः इमं अभिसंविशध्वम्)** देवताओ, आप सब ओर से **(दीर्घायुत्वाय शतशारदाय)** सौ वर्ष की लम्बी आयु के लिए इस मनुष्य में प्रवेश करें, **(यथा)** जिससे यह **(आयुष्मान्)** दीर्घायु और **(जरदष्टिः असत्)** वृद्धावस्था का उपभोग करने वाला बने।

(द्यौ, वायु, अग्नि, आपः, सूर्य, इन्द्र, सोम आदि देवताओं के मानव शरीर में प्रवेश से रोग नष्ट हो जाते हैं और दीर्घ जीवन प्राप्त होता है।)

ओ३म् उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्।

देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।। यजु. ३५.१४

(वयं) हम **(तमसः परि)** अन्धकार के परे **(उत्)** ऊपर **(स्वः पश्यन्तः)** सुखदायक प्रकाश को देखते हुए **(उत्तरं अगन्म)** ऊपर और ऊपर उठते जायें। **(देवत्राः)** हे देवताओं के रक्षक, ऐसा करो कि हम **(उत्तमं ज्योतिः)** सर्वोत्तम जीवन दायक ज्योति **(सूर्यं देवं अगन्म)** सूर्यं देव तक पहुंच जायें।

ओ३म् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् पश्येम शरदः शतं, जीवेम शरदः शतꣳ श‍ृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।

यजु. ३६.२४

(तत्) उस **(देवहितं)** देवताओं द्वारा आकाश में रखे गये **(चक्षुः)** नेत्र रूपी सूर्य को **(पुरस्तात्)** सामने, पूर्व की ओर से **(शुक्रं)** दमक के साथ **(उच्चरत्)** ऊपर उठते हुए हम **(शतं शरदः पश्येम)** सौ शरद्ऋतुओं तक अर्थात् सौ वर्ष तक देखें; **(जीवेम शरदः शतं)** हम सौ वर्ष तक जीयें; **(श्रृणुयाम शरदः शतं)** सौ वर्ष तक कानों से साफ़ साफ़ सुनें; **(प्रब्रवाम शरदः शतं)** सौ वर्ष तक वाणी से स्पष्ट बोलते रहें; **(अदीनाः स्याम शरदः शतं)** सौ वर्ष तक हम अदीन हो कर, अपने सहारे, बिना किसी से याचना किये जीवित रहें, और यदि ऐसी स्थितियां बनी रहें (स्पष्ट दिखाई पड़ता हो, सुनाई पड़ता हो, बोला जाता हो, किसी के सहारे की आवश्यकता न हो) तो **(भूयश्च शरदः शतात्)** सौ वर्ष के बाद भी जीते रहें।

दैनिक यज्ञ की आहुतियां—महामृत्युञ्जय यज्ञ की आहुतियां पूरी हुईं। इनके पश्चात् दैनिक यज्ञ की निम्नलिखित आहुतियां दे कर यज्ञ समाप्त करें :

ओ३म् सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।

(सूर्यः ज्योतिः) सूर्य ज्योति है; **(ज्योतिः सूर्यः)** ज्योति ही सूर्य है। **(स्वाहा)** उसके लिए यह आहुति है।

ओ३म् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा।

(अग्निः ज्योतिः) अग्नि ज्योति है; **(ज्योतिः अग्निः)** ज्योति ही अग्नि है। **(स्वाहा)** उसके लिए यह आहुति है।

सूर्य और अग्नि जीवन ज्योति को बढ़ाते हैं।

ओ३म् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा।

(भूः) भूमि पर **(प्राणाय)** प्राण वायु को ठीक रखने के लिए **(अग्नये स्वाहा)** अग्नि के लिए यह आहुति है।

ओ३म् भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा।

(भुवः) अन्तरिक्ष में **(अपानाय)** अपान वायु को ठीक रखने के लिए **(वायवे स्वाहा)** वायु के लिए यह आहुति है।

ओ३म् स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा।

(स्वः) द्यु लोक में **(व्यानाय)** व्यान वायु को ठीक रखने के लिए **(आदित्याय स्वाहा)** सूर्य के लिए यह आहुति है। भूमि पर स्थित अग्नि प्राण वायु को, अन्तरिक्ष में स्थित वायु अपान वायु को और द्यु लोक में स्थित सूर्य व्यान वायु को नियंत्रित करता है। इन तीन के सही रहने से स्वास्थ्य प्राप्त होता है और बिगड़ने से रोग होते हैं।

ओ३म् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु। यजु. ३२.१४

(यां मेधां) जिस तीव्र बुद्धि की **(देव गणाः)** देव गण और **(पितरः)** पितर लोग **(उपासते)** आराधना, कामना करते हैं, **(अग्ने)** हे अग्नि, **(अद्य मां तया मेधया मेधाविनं कुरु)** आज मुझे उस तीव्र बुद्धि से युक्त मेधावी बना दो।

शान्तिपाठ

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः। सर्वँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।
यजु. ३६.१७

(द्यौः शान्तिः) द्युलोक अर्थात् पृथ्वी के चारों ओर फैला आकाश हमें शान्ति दे; **(अन्तरिक्षं शान्तिः)** पृथ्वी के ऊपर पृथ्वी के छिलके के रूप में फैला आकाश का वह भाग, जिसमें पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बना रहता है, अन्तरिक्ष हमें शान्ति देने वाला हो; **(पृथिवी शान्तिः)** पृथ्वी हमें शान्ति देने वाली हो; **(आपः)** जल (वर्षा, नदी, कुएं, तालाब, समुद्र आदि के तरह तरह के जल) हमें शान्ति दें; **(ओषधयः)** फसली पौधे, **(वनस्पतयः)** वृक्ष और जड़ी बूटियां, हमें शान्ति देने वाली हों। **(विश्वेदेवाः)** सभी देव हमें शान्ति प्रदान करें। **(ब्रह्म शान्तिः)** प्रार्थना हमें शान्ति देने वाली हो। **(सर्वं शान्तिः)** सब कुछ हमें शान्ति देने

वाला हो। **(शान्तिः एव शान्तिः)** सब ओर शांति ही शांति हो। **(सा शान्तिः मा एधि)** ऐसी शान्ति मुझे प्राप्त हो।

पूर्णाहुति—नीचे लिखे मंत्र को तीन बार पढ़ कर तीन बार में सारा घी और सामग्री हवन कुंड में डाल दें।

ओ३म् सर्वँ वै पूर्णँ स्वाहा।

(सर्वं) सब कुछ (पूर्णं) पूरा का पूरा **(वै)** निश्चयपूर्वक **(स्वाहा)** तेरे लिए इस आहुति में अर्पित है।

यज्ञ समाप्ति के पश्चात् जब हवन कुंड में लपटें उठनी बन्द हो जायें, तब दहकते कोयलों पर दो तोला (२० ग्राम) गूगल डाल कर हवन कुंड को रोगी के कमरे में रखें।

यह महामृत्युंजय यज्ञ जब तक रोगी स्वस्थ न हो जाये, प्रतिदिन होना चाहिए।

गायत्री मंत्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। यजु. ३६.३

(भूः भुवः स्वः) सत्, चित्, आनन्द! हम **(सवितुः)** सृष्टि के प्रेरक उस सविता **(देवस्य)** देव के **(वरेण्यं भर्गः)** सर्वोत्तम तेज को **(धीमहि)** प्राप्त करने की कामना करते हैं, **(यः)** जो **(नः धियः)** हमारी बुद्धियों को **(प्रचोदयात्)** प्रेरणा दे कर निरन्तर सक्रिय बनाये रखे। हमारी ज्ञानेन्द्रियां और उनसे प्रेरित कर्मेन्द्रियां कभी कुंठित न हों।

तीन रोचक पुस्तकें

कथा वल्लरी

लेखिका—सुनीति

इस पुस्तक में २० सुन्दर और प्रेरक कहानियां हैं, जो व्यक्ति के चरित्र निर्माण में सहायक हैं। जन्म दिन या किसी भी शुभ अवसर पर उपहार देने योग्य उत्तम पुस्तक। सरल भाषा, सुन्दर छपाई। मूल्य तीस रुपये।

कथा मंजरी

लेखिका—सुनीति

इस सचित्र पुस्तक में १२ रोचक, शिक्षाप्रद कहानियां हैं, जो बालक—बालिकाओं के मन पर गहरी छाप छोड़ती हैं। सदाचार की शिक्षा की दृष्टि से अनमोल पुस्तक। मूल्य पैंतीस रुपये।

डरावने लुभावने वन जीव

लेखक—सुनीति—हरिवंश

दो रंगों में छपी इस पुस्तक में सिंह, बाघ, तेंदुआ, भालू, हाथी, अजगर जैसे डरावने और साथ ही लुभावने वन जीवों का बहुत ही रोचक, सच्चा, आंखों देखा वर्णन प्रस्तुत किया गया है। यह समूची पुस्तक 'बाल भारती' पत्रिका में धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुई थी। अब पुस्तक रूप में उपलब्ध है। मूल्य १२५ रुपये।

हेमगंगा प्रकाशन

२७—राजपुर रोड, दिल्ली—११००५४

यज्ञ की उपयोगिता

यज्ञ से सब अभीष्ट पूरे हो जायेंगे, इस विश्वास को हम फैलाना नहीं चाहते। वृष्टि यज्ञ एवं पुत्रेष्टि यज्ञ को हमने विफल होते देखा है। प्रदर्शन के लिए किये जाने वाले दशकुंडी और शतकुंडी यज्ञों को हम लोक वंचना के लिए किया जा रहा पाखंड मानते हैं।

जैसे योग प्रदर्शन की नहीं, साधना की वस्तु है, वैसे ही यज्ञ भी साधना के रूप में होना चाहिए।

यज्ञ की उपयोगिता सीमित है। जिन महानुभाव के आरोग्य के लिए हमने यह यज्ञ बार-बार किया, वह विपत्ति के गह्वर में बहुत दूर तक पहुंच चुके थे। इलाज पूरा आश्वासन नहीं देते थे; महंगे, कष्टप्रद और जोखिम भरे थे। सफलता की आशा 50% से कम थी।

दस महीने की चिकित्सा के बाद वह स्वस्थ हो गये। यज्ञ भी चलता रहा। परन्तु इससे कारण-कार्य सम्बन्ध जोड़ लेना उचित नहीं होगा। चिकित्सा बन्द करके केवल यज्ञ करने का परिणाम क्या होता, हम कहने की स्थिति में नहीं हैं।

परन्तु यज्ञ का कुछ लाभ सुनिश्चित रूप से हुआ। हम परिजनों को यह सान्त्वना रही कि हम भी चिकित्सा के लिए कुछ कर रहे हैं। अर्थ को मन में समझते हुए मर्मस्पर्शी वेद मंत्रों का पाठ बहुत धैर्य बंधाता था और रोगी का मनोबल बढ़ाता था। वातावरण ही बदल जाता था।

परम शक्ति से प्रार्थना का भी कुछ तो फल होता ही था। बच्चा मां को अपनी व्यथा बता कर जो शान्ति पाता है, वह अनुभव होती थी।

इलाज पर पांच लाख रुपये लगे। यज्ञ पर कुल मिला कर पांच हजार भी नहीं लगे। घर के सभी लोगों को धैर्य बंधा, सान्त्वना मिली और आशा बनी रही। रोगी का आत्म-विश्वास बना रहा।

कुल मिला कर बहुत लाभ रहा। जो लोग इतना व्यय करके इतने लाभ से संतुष्ट हों, वे महामृत्युज्जय यज्ञ अवश्य करें।